विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम, लखीसराय

(एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित)

कक्षा- पंचम् **तिथि- 23.08.2021**

विषय-_संस्कृत **सुमिता कुमारी**

सुप्रभात बच्चों,

आज आप सब मध्यमः पुरुषः से जुड़े प्रश्न के बारें में' समझेंगे|

संस्कृत

दशमः पाठः

1.

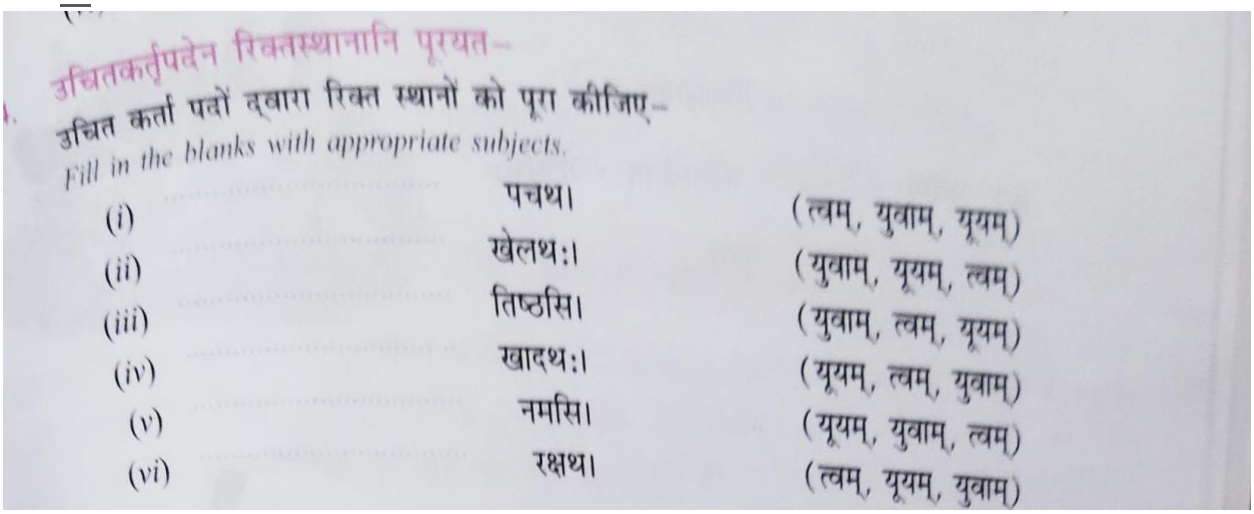

उचितकर्तृपदेन रिक्तस्थानानि पूरयत–

उचित कर्ता पदों द्वारा रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए–

Fill in the blanks with appropriate subjects.

(i)	पचथ।	(त्वम्, युवाम्, यूयम्)
(ii)	खेलथः।	(युवाम्, यूयम्, त्वम्)
(iii)	तिष्ठसि।	(युवाम्, त्वम्, यूयम्)
(iv)	खादथः।	(यूयम्, त्वम्, युवाम्)
(v)	नमसि।	(यूयम्, युवाम्, त्वम्)
(vi)	रक्षथ।	(त्वम्, यूयम्, युवाम्)

उत्तर- (i) यूयम् (ii) युवाम्

(iii) त्वम् (iv) युवाम्

(v) त्वम् (vi) यूयम्

2.

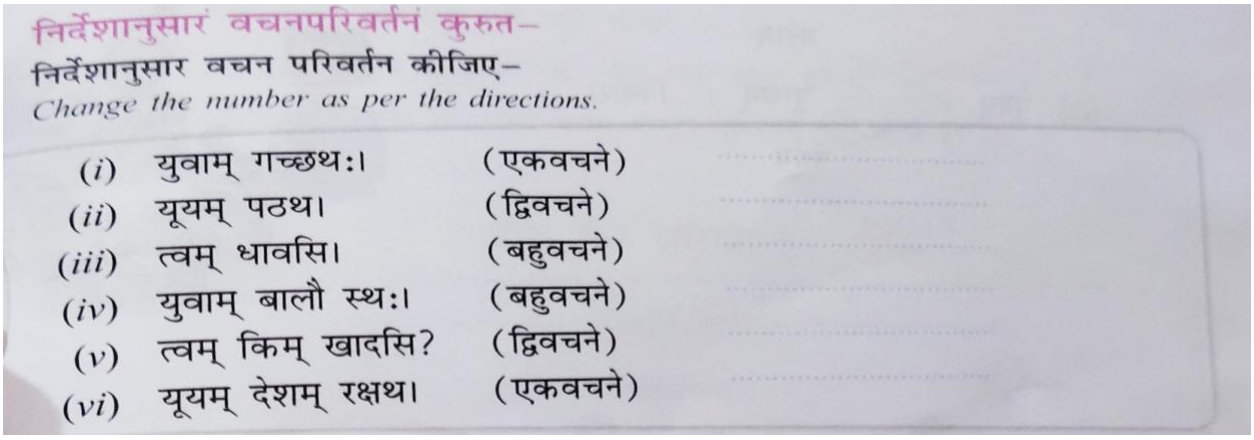

निर्देशानुसारं वचनपरिवर्तनं कुरुत–

निर्देशानुसार वचन परिवर्तन कीजिए–

Change the number as per the directions.

(*i*) युवाम् गच्छथः। (एकवचने) ....

(*ii*) यूयम् पठथ। (द्विवचने) ....

(*iii*) त्वम् धावसि। (बहुवचने) ....

(*iv*) युवाम् बालौ स्थः। (बहुवचने) ....

(*v*) त्वम् किम् खादसि? (द्विवचने) ....

(*vi*) यूयम् देशम् रक्षथ। (एकवचने) ....

(i) त्वम् गच्छसि । (ii) युवाम् पठथः ।

(iii) यूयम् धावथ । (iv) यूयम् बालाः स्थः ।

(v) युवाम् किम् खाद्य? (vi) त्वम् देशं रक्षसि ।

<u>अभ्यास</u>

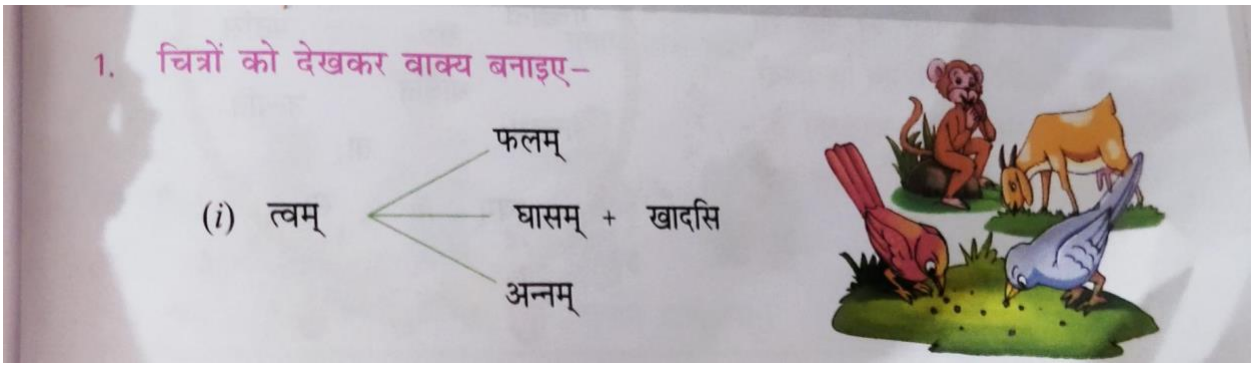

1. चित्रों को देखकर वाक्य बनाइए–

(*i*) त्वम् — फलम् / घासम् / अन्नम् + खादसि

(ii) युवाम् — विद्यालयम् / क्रीडाक्षेत्रम् / गृहम् + गच्छथः

(iii) यूयम् — जलम् / दुग्धम् / पेयम् + पिबथ।

2. नीचे दिए गए चक्र में कर्ता पद एवं क्रिया पद दिए गए हैं। एकवचन के कर्ता एवं क्रियापदों को नीले रंग से, द्विवचन के कर्ता एवं क्रियापदों को हरे रंग से तथा बहुवचन के कर्ता एवं क्रियापदों को लाल रंग से रँगिए–

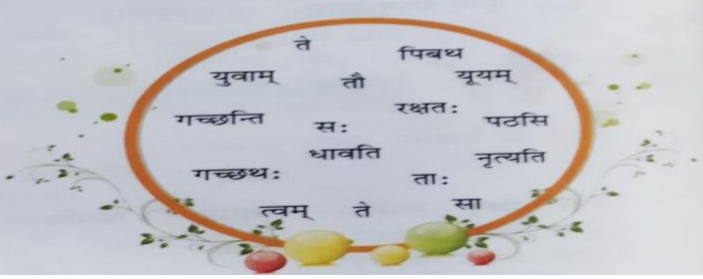

निम्नलिखित वाक्यों के सामने 'शुद्धम्' अथवा 'अशुद्धम्' लिखिए–

(i) यूयम् देशम् रक्षथ। ☐
(ii) युवाम् जलम् पिबसि। ☐
(iii) त्वम् कुत्र गच्छथः? ☐
(iv) युवाम् पाठम् पठसि। ☐
(v) त्वम् चित्रम् पश्यसि। ☐
(vi) यूयम् सत्यम् वदथः। ☐

मूल्यपरकप्रश्नः Value Based Question

परिवार को एक वृक्ष के समान कहा जाता है। आप इनमें से जिस जिस बात से सहमत हैं, उसके आगे 'आम्' तथा जिससे सहमत नहीं हैं, उसके आगे 'न' लिखिए–

(क) हमारे परिवारजन हमें वृक्ष की तरह सुरक्षा देते हैं। ☐
(ख) हमारे परिवारजन हमें वृक्ष की तरह भोजन देते हैं। ☐
(ग) हमारे परिवारजन हमें वृक्ष की तरह प्रेम रूपी छाया देते हैं। ☐
(घ) हमारे परिवारजन वृक्ष की तरह कभी हमारा नुकसान नहीं करते हैं। ☐